



Published by:

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

#### © Copyright Reserved with the Publishers only.

### Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

#### Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

### Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

# <u>Content</u>

# पर्यावरण समाजशास्त्र (Administrative Thinkers)

Question Paper—June-2023 (Solved)	1
Question Paper—December-2022 (Solved)	1
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved)	1
Sample Question Paper-1 (Solved)	1
Sample Question Paper-2 (Solved)	1

# S.No.

# Chapterwise Reference Book

Page

# पर्यावरण समाजशास्त्र की परिकल्पना

# (Envisioning Environmental Sociology)

1.	पर्यावरणीय समाजशास्त्र : प्रकृति एवं संभावनाएँ ( Environmental Sociology: Nature and Possibilities )	1
2.	यथार्थवाद और संरचनावाद के बीच विवाद ( Realist Constructionist Debate )	13
3.	मुख्य अवधारणा (विषय) (Key Concepts)	20
दृष्टिव	जेण	
( Appr	oaches )	
4.	सामाजिक पारिस्थितिकी विज्ञान ( Social Ecology )	31
5.	उत्पादन को नीरस दिनचर्या (ट्रेडमिल) ( Treadmill of Production )	41
	उत्पादन को नीरस दिनचर्या (ट्रेडमिल) ( Treadmill of Production ) पारिस्थितिक आधुनिकीकरण ( Ecological Modernization )	
6.		48

9. राजनीतिक पारिस्थितिकी (Political Ecology)...... 76

S.No	Chapterwise Reference Book	Page					
ਧੁਹੀਰਾ	पर्यावरणीय मुद्दे और चिंता						
(Environmental Issues and Concern )							
10.	मानव जनित युग और जलवायु परिवर्तन (एथ्रोंपोसीन एंड क्लाइमेट चेंज) (Anthropocene and Climate Change )	85					
11.	प्रदूषण ( Pollution )	97					
12.	भारत में पर्यावरण नीति ( Environmental Policy in India )	110					
भारत में पर्यावरण आंदोलन							
(Environmental Movements in India)							
13.	वन आधारित आंदोलन-चिपको ( Forest Based Movement - Chipko )	. 127					
14.	जल आधारित आंदोलन-नर्मदा ( Water Based Movement - Narmada )	134					
15.	भूमि आधारित आंदोलन (खनन एवं बीज विरोधी) ( Land Based Movement – Anti-mining and Seed )	145					



# **QUESTION PAPER**

# June – 2023

## (Solved)

# पर्यावरण समाजशास्त्र (Environmental Sociology)

# **B.S.O.E.-143**

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. पर्यावरणवाद शब्द से आप क्या समझते हैं? चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-21, 'पर्यावरणवाद', पृष्ठ-27, प्रश्न 1

प्रश्न 2. पारिस्थितिकी के संबंध में राधाकमल मुखर्जी द्वारा उठाए गए मुद्दों पर चर्चा कीजिए।

**उत्तर–संदर्भ–**देखें अध्याय-4, पृष्ठ-32, 'सामाजिक पारिस्थितिकी–भारतीय परिप्रेक्ष्य में'

प्रश्न 3. जोखिम समाज क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-62, प्रश्न 6

प्रश्न 4. पर्यावरण के अध्ययन हेतु बीना अग्रवाल के योगदान का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-71, प्रश्न 4

प्रश्न 5. 'राजनीतिक पारिस्थितिकी' शब्द पर चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-76, 'राजनीतिक पारिस्थितिकी : परिभाषा को समझना'

प्रश्न 6. भारत में वायु प्रदूषण पर एक नोट लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-97, 'वायु प्रदूषण', पृष्ठ-100, प्रश्न 3 (1. वायु प्रदूषण)

प्रश्न 7. उत्तरखण्ड में आयोजित बीज बचाओ आन्दोलन की प्रकृति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–भारत में बीज बचाओ आंदोलन की शुरुआत परंपरागत बीजों की विलुप्त होती प्रजातियों के संरक्षण के लिए हुई थी। बीज आंदोलन को किसानों, कार्यकर्ताओं, गैर-सरकारी संगठनों द्वारा पूरे

देश में व्यापक स्तर शुरू किया गया था। हरित क्रांति और जैव-प्रौद्योगिकी के कारण खेती के लिए नई किस्म के बीजों का उपयोग शुरू किया जाने लगा। पहले खेती परंपरागत तरीके से की जाती है और पारंपरिक बीजों का उपयोग किया जाता था। हरित क्रांति के बाद बीजों का स्वामित्व बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अंतर्राष्ट्रीय निगमों के हाथों में आ गया। भारत के प्रचलित बीज तथा खेती के पारंपरिक तरीके विलुप्त हो गए। पारंपरिक बीजों की जगह जैविक खेती के विरोध में 1991 में उत्तराखंड के पहाड़ों में पारंपरिक बीजों को बचाने के उद्देश्य से बीज बचाओ आंदोलन की शुरुआत की गयी। आंदोलनकर्त्ता काश्तकारों को पारम्परिक बीजों के लिए लगातार जागरूक कर रहे हैं। साथ ही टिकाऊ खेती के लिए गैर-रासायनिक खेती और पारम्परिक बीजों को बचाने की मुहिम में जुटे हैं। ये लोग स्वयं भी खेती करते हैं तथा दूसरे लोगों को भी परम्परिक बीज उपलब्ध करवाते हैं। इसके अलावा जन समस्याओं बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दों को लेकर भी समय-समय पर शासन प्रशासन से जूझते रहते हैं।

**इसे भी देखें–संदर्भ–**अध्याय–15, पृष्ठ–147, 'बीज बचाओ आंदोलन : उत्तराखंड (1980 का दशक), पृष्ठ–153, 'उत्तराखंड में भूमि संरक्षण आंदोलन'

प्रश्न 8. एंथ्रोपोसीन शब्द से आप क्या समझते हैं? चर्चा कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-85, 'एंथ्रोपोसीन : मूल उत्पत्ति (द ओरिजिन), पृष्ठ-87, 'एंथ्रोपोसीन', पृष्ठ-94, प्रश्न 1, पृष्ठ-95, प्रश्न 2

# QUESTION PAPER

December - 2022

# (Solved)

# पर्यावरण समाजशास्त्र ( Environmental Sociology )

**B.S.O.E.-143** 

समय : 3 घण्टे	। अधिकतम अंक : 100
<b>नोट :</b> किन्हीं <b>पाँच</b> प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी के अंक समान हे	ŤI
प्रश्न 1. मानवीय गतिविधियों के फलस्वरूप उत्पन्न होने	प्रश्न 5. भारत में भूमि और वनों पर आधारित औपनिवेशिक
वाले कुछ पर्यावरणीय मुद्दों की जाँच कीजिए।	दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए।
<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'पर्यावरणीय दुर्दशाएं'	<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-9, पृष्ठ-77, 'भारत में भूमि और
प्रश्न 2. 'पारिस्थितिक सम्मिश्र' (ecological complex)	वन पर उपनिवेशीय दृष्टिकोण', पृष्ठ-82, प्रश्न-3
शब्द से आप क्या समझते हैं? चर्चा कीजिए।	प्रश्न 6. लैंगिकता एवं विकास के बीच संबंध का मूल्यांकन
<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'परिचय', पृष्ठ-22,	कीजिए।
'पारिस्थितिकी सम्मिश्रण'	<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-8, पृष्ठ-70, प्रश्न-3
प्रश्न 3. भारतीय संदर्भ के मद्देनजर सामाजिक पारिस्थितिकी	प्रश्न 7. गंगा नदी के निचले स्तरों में उत्पन्न जल प्रदूषण
पर संक्षेप में एक नोट लिखिए।	पर एक नोट लिखिए।
<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-4, पृष्ठ-32, 'सामाजिक	<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-11, पृष्ठ-98, 'निचली गंगा नदी
पारिस्थितिकी : भारतीय परिप्रेक्ष्य में'	(लोअर गंगा रिवर) में जल प्रदूषण : एक उदाहरण', पृष्ठ-105,
प्रश्न 4. ट्रेडमिल ऑफ प्रोडक्शन थ्योरी का आलोचनात्मक	प्रश्न-5
मूल्यांकन कोजिए।	प्रश्न 8. नर्मदा बचाओ आंदोलन के उद्भव की चर्चा
<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-5, पृष्ठ-41, 'प्रॉडक्शन थ्योरी के	कीजिए।
ट्रेडमिल का उद्गमन'	<b>उत्तर–संदर्भ–</b> देखें अध्याय-14, पृष्ठ-137, प्रश्न-2 एवं प्रश्न-3
	••



# पर्यावरण समाजशास्त्र

(Environmental Sociology)

पर्यावरण समाजशास्त्र की परिकल्पना (Envisioning Environmental Sociology)

पर्यावरणीय समाजशास्त्र : प्रकृति एवं संभावनाएँ (Environmental Sociology: Nature and Possibilities)

का योगदान रहा है, जिन्होंने पर्यावरण में मानवीय गतिविधियों से होने वाले नुकसान पर लोगों का ध्यान केंद्रित करवाया।

1960 और 1970 के दशक के पर्यावरण आंदोलन के बाद पर्यावरण समाजशास्त्र, समाजशास्त्र के एक उपक्षेत्र के रूप में उभर कर आया। 70 के दशक को पर्यावरणीय दशक तथा पहली बार 22 अप्रैल 1970 को पृथ्वी दिवस मनाया गया, यहीं से आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की शुरुआत मानी जाती है। 1970 से पहले अमेरिका का समाजशास्त्र (ग्रामीण समाजशास्त्र), जिसे शास्त्रीय समाजशास्त्र भी कहा जाता है, में अमेरिकन लेखक रेचल कार्सन ने अपनी पुस्तक 'Silent Spring' (1962) में डीडीटी तथा कृषि कीटनाशकों के इस्तेमाल से पर्यावरण तथा मानवीय अस्तित्व पर होने वाले दुष्प्रभाव का वर्णन किया है।

अमेरिका में पर्यावरण समाजशास्त्र की स्थापना का श्रेय रिले डनलप और विलियम कैटन को जाता है। इनके कार्यों ने शास्त्रीय समाजशास्त्र के संकुचित मानवशास्त्रवाद को चुनौती दी, जबकि पर्यावरणीय समाजशास्त्र पर्यावरण-समाज के संबंधों के अध्ययन पर केंद्रित है। अमेरिका में लव कैनाल प्रकरण भी मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली एक भयंकर पर्यावरणीय त्रासदी बन गया, जिसकी वजह से 1970 के दशक में अमेरिका में अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर को स्वास्थ्य आपातकाल घोषित करना पड़ा और भविष्य में ऐसी त्रासदी न हो, इसलिए 1978 में अमेरिका में पर्यावरणीय प्रतिक्रिया, मुआवजा एवं उत्तरदायित्व अधिनियम पारित किया गया। ब्रिटेन में 1980 के दशक में पर्यावरणीय परिवर्तन कार्यक्रम (Global Environmental Change Programme) की स्थापना के साथ इस विषय पर अध्ययन किया जाने लगा। नीदरलैंड में 26 प्रतिशत भूक्षेत्र समुद्र स्तर के नीचे है,

# परिचय

पर्यावरण सामजशास्त्र दो शब्दों के योग से बना है। यहाँ पर्यावरण से हमारा अभिप्राय हमारे चारों तरफ का वह प्राकृतिक आवरण, जो हमें सफलतापूर्वक जीवन-यापन करने में सहायक होता है; जैसे-जीव, भूमि, पानी हवा एवं धरती पर उपलब्ध प्रत्येक साधन, जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक हैं। वहीं समाजशास्त्र से हमारा अभिप्राय मानव समाज के अध्ययन से है। समाजशास्त्र का मुख्य केंद्रीय बिंदु समाज, सामाजिक व्यवहार, समूहों, संस्थानों, सामाजिक ढाँचे इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पर्यावरणीय समाजशास्त्र मानव समाज और उनके भौतिक पर्यावरण के संबंधों के अध्ययन का तरीका है। आर. डनलप और कैटन ने पर्यावरण और समाजशास्त्र के अध्ययन को सामाजिक पर्यावरणीय संबंध कहा है।

# अध्याय का विहंगावलोकन

# पर्यावरणीय समाजशास्त्र का उद्भव

औद्योगीकरण और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पर्यावरण समाजशास्त्र पर विकास की तेज गति ने ऐसी समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं, जो पर्यावरणीय चिंताओं का कारण बनती हैं। प्राकृतिक पर्यावरण मानवीय चिंताओं का कारण बना है। प्राकृतिक पर्यावरण मानवीय अतिक्रमण के दायरे में आ गया है। अत्यधिक प्राकृतिक साधनों के दोहन ने और उद्योगों से उत्पन्न कचरे ने पर्यावरण को विनाश की ओर धकेल दिया है। पर्यावरण समाजशास्त्र के उद्भव में गिफर्ड पिन्शो, जॉर्ज पर्किंस, आल्डो लियपोल्ड इत्यदि संरक्षणवादियों

# www.neerajbooks.com

#### 2 / NEERAJ : पर्यावरण समाजशास्त्र

इसलिए वहाँ पर पर्यावरणीय क्षति में बाढ़ की समस्या, कृषि एवं जोखिम की समस्याओं के समाधानों पर अध्ययन किया जाने लगा।

पयार्वरण समाजशास्त्र के महत्त्व को समझते हुए। 1990 में जापान और कोरिया में पर्यावरणीय समाजशास्त्र को अध्ययन की अलग शाखा के रूप में स्थापित किया गया। 1992 में 'Japanese Association for Environmental Socioloy' तथा 2000 में कोरिया में 'Korean Association for Enviromental Socioloy' का गठन हुआ।

### सामाजिक-पर्यावरण संबंधों की परिकल्पना

मानव और पर्यावरण के बीच के संबंधों के अध्ययन ने सदैव सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। सामाजिक पर्यावरणीय संबंधों में मानवीय क्रियाकलाप कैसे पर्यावरण को प्रभावित करते हैं, जिससे समाज और पर्यावरण के संबंधों को हम सरलता से समझ सकते हैं तथा समाज में पर्यावरण द्वंद्व कैसे हल किया जा सकता है। इन पारस्परिकताओं को इसलिए भी महत्त्व मिलता क्योंकि मानव जीवन के अस्तित्व के लिए जैवभौतिकीय पर्यावरण अत्यावश्यक है।

## मानवीय पारिस्थितिकी मॉडल

मानव पारिस्थितिकी मॉडल का प्रतिपादन 1920 में रॉबर्ट्र ई. पार्क ने चार्ल्स डार्विन के अध्ययन को केंद्रीय बिंदु बनाकर किया। मानवीय पारिस्थितिकी एक अंतर्विषयक विज्ञान है, जिसमें मनुष्य, मानव समाज और मानव निर्मित पर्यावरण के प्राकृतिक पर्यावरण के साथ संबंधों का अध्ययन है। वर्तमान परिप्रेक्ष्यों में पर्यावरण में परिवर्तन और मानव पर उसके प्रभाव, मानव स्वास्थ्य, सामाजिक सरोकारों का पारिस्थितिकीय अध्ययन, आर्थिक क्रियाओं की संधारणीयता, प्रकृति प्रदत्त पारितंत्रीय सेवाओं का मूल्यांकन और पारिस्थितिकीय अर्थशास्त्र का विकास मानवीय पारिस्थितिकीय के मूल अध्ययन का विषय है। रॉबर्ट ई. पार्क ई. वर्गेज और मैकेंजी ने शहरी व्यवस्था में मानवीय पारिस्थितिकी के सिद्धांत को लागू करके अध्ययन किया।

#### समाज : पर्यावरण पारस्परिकता

मनुष्य एक सामाजिक प्रणी है, जो अपने सभी क्रियाकलापों के लिए पर्यावरण पर निर्भर है। पर्यावरण मानव समाज के लिए जीविका का आधार है। हमें अपने दैनिक जीवन के लिए जो आवश्यक चीजें होती हैं, वे पर्यावरण द्वारा उपलब्ध करवायी जाती हैं। पर्यावरण अपशिष्ट भंडार के रूप में भी कार्य करता है। उदाहरण के लिए, पेड़ों द्वारा कार्बन डाई ऑक्साइड लेकर हमें ऑक्सीजन देना।

लेकिन सभ्यता के विकास के कारण पर्यावरण के ये तीनों रूप अपनी गतिविधियों का विस्तार करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। सामान्य शब्दों में, अगर औद्योगिक विकास हो रहा है तो अपशिष्ट प्रबंधन, अर्थात् उद्योगों का जहाँ पर कचरा विसर्जित किया जाता है, वह भूमि निवास योग्य नहीं रह जाती। उदाहरण लव कैनाल प्रकरण है। शहरीकरण होता है तो पर्यावरण तथा वन्य जीव जन्तुओं के भरण–पोषण पर प्रभाव पड़ता है। समाज के क्रियाकलापों में प्रतिस्पर्धा तथा संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है।

#### समाज : पर्यावरणीय द्वंद्व

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप प्रकृति में कच्चे पदार्थ तथा प्राकृतिक संसाधनों की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। समाज में अगर आर्थिक विकास होता है तो पर्यावरण संकट उत्पन्न होता जाता है क्योंकि उद्योगों का निरंतर विकास पर्यावरण के लिए घातक सिद्ध हो रहा है, माँग बढ़ती जा रही है, इसलिए राज्यों को आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय नियंत्रण पर भी अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एलेन श्नाईबर्ग ने अपनी पुस्तक 'The Environment: From Surplus to Scarcity (1980)' में समाज-पर्यावरण द्वंद्व को और विस्तार के विश्लेषणात्मक तरीके को स्पष्ट किया है। श्नाईबर्ग उन्नत औद्योगिक समाजों में नीति निर्धारण की प्रक्रियाओं के दौरान पर्यावरण संरक्षण एवं आर्थिक विस्तार की निरंतर बढ़ती माँग के बीच द्वंद्वात्मक तनाव की भी पहचान करते हैं।

## पर्यावरणीय दुर्दशाएँ

औद्योगिक समाज के पर्यावरण पर पड़ने वाले भयंकर प्रभाव के कारण जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, वे इस प्रकार हैं–

#### वैश्विक तापमान वृद्धि यानी ग्लोबल वार्मिंग

वैश्विक तापमान अर्थात् ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। ग्लोबल वार्मिंग से धरती के वातावरण पर तापमान में बढ़ोत्तरी हो रही है। धरती के वातावरण में मौजूद कार्बन-डाई-ऑक्साइड CO<sub>2</sub> सूर्य की गर्मी को अवशोषित कर लेती है, जिसके कारण पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ रहा है। अन्य कार्बन गैसों का भी जो मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होती हैं का पर्यावरण और वैश्विक तापमान पर प्रभाव पड़ता है। वैश्विक तापमान वृद्धि अर्थात् ग्लोबल वार्मिंग से हमारे जीवन पर प्रभाव के कुछ उदाहरण भीषण गर्मी, सूखे का संकट, ग्लेशियरों का पिघलना, मौसम में बदलाव तथा अज्ञात बीमारियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

#### ओजोन क्षय

ओजोन (O<sub>3</sub>) ऑक्सीजन की तीन परतों से बनी होती है। ओजोन वाली निर्मित परत को ओजोन परत कहा जाता है। ओजोन परत सूर्य की पराबैंगनी विकिरण के दुष्प्रभावों से पृथ्वी की रक्षा करती है। पराबैंगनी विकिरण की वजह से मनुष्य कई तरह की पर्यावरणीय समाजशास्त्र : प्रकृति एवं संभावनाएँ / 3

बीमारियों से ग्रस्त हो रहा है। 1985 में वैज्ञानिकों ने दक्षिण ध्रुव में ओजोन परत से हुये सर्वाधिक नुकसान का पता लगाया था, जिसे हम ओजोन छिद्र के नाम से जानते हैं। आज सबसे बड़ी चिंता वैज्ञानिकों के लिए ओजोन परत की क्षति का तथा पराबैंगनी विकिरणों का मनुष्य पर होने वाले दुष्प्रभाव हैं।

#### ધુંધ

धुंध के कारण अत्यधिक वायु प्रदूषण हो रहा है। सामान्यत: धुंध को विशेषज्ञों ने दो भागों में बाँटा है–

रासायनिक धुंध-धुंध का यह प्रकार विश्व के सभी शहरों में देखा जाता है जो भूरे रंग की होती है, रासायनिक धुंध नाइट्रोजन ऑक्साइड है। रासायनिक धुंध वायुमंडल में नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकी की रासायनिक अभिक्रिया है, जो वायुमंडलीय कणों और भू-स्तर ओजोन को छोड़ती है। जीवाश्म ईधन तथा गाड़ियों, कारखानों से निकलने वाला धुआँ कई तरह के नाइट्रोजन ऑक्साइड घटकों को पैदा करता है, जो सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में पराबैंगनी क्रियाओं के साथ क्रिया करके भारी धुंध बना देते हैं। रासायनिक धुंध से मानव शरीर में ओजोन गैसों के जाने से मनुष्य तथा जंतुओं के फेफड़ों तथा पौधों की पत्तियों के ऊतकों को नष्ट कर सकती है। इस धुंध से ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों की उपजाऊ क्षमता खत्म हो जाती है।

सफेद धुंध-सफेद धुंध या स्मॉग एक प्रकार का तीव्र वायु प्रदूषण है। सफेद धुंध वायु में मिलने वाले सूक्ष्म कण होते हैं। ये कण इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें आँखों से देख पाना असंभव होता है। इस तरह के कणों की उत्पत्ति वाहनों के धुएं, ऊर्जा संयंत्रों, यातायात, भवन-निर्माण, आग जलाने या तेज हवाओं के चलने से उड़ती है और अन्य घटक सफेद धुंध के सल्फेट, नाइट्रेट, अमोनियम और कार्बनिक घटकों से होती है। इस धुंध से निकलने वाले अति सूक्ष्म कण मानव शरीर के अंदर जाकर फेफड़ों को नुकसान पहुँचाते हैं।

### अम्ल वर्षा

अम्लीय वर्षा का अर्थ उस वर्षा से है जिसमें हिम, गोला और कोहरा होता है, जिसमें 'कार्बन डाइऑक्साइड (CO<sub>2</sub>)' के अतिरिक्त 'सल्फर डाइऑक्साइड (SO<sub>2</sub>)' तथा 'नाइट्रोजन के ऑक्साइड (NOX)' घुले हों। इनका उत्सर्जन वातावरण में अम्लीय वर्षा के रूप में आता है। अम्लीय वर्षा दैनिक वनस्पतियों और ऊतकों को नुकसान होता है तथा मृदा की उपजाऊ क्षमता भी कम हो जाती है, जिससे फसलों के उत्पादन में गिरावट आती है। जल स्रोतों का पानी अम्लता की वृद्धि की वजह से जलीय जंतुओं के जीवन के लिए खतरा बनता है। चीन के जंगलों पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि अम्लीय वर्षा के कारण पतझड़ की दर में 40 प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गयी। दुनिया भर में अम्लीय वर्षा चिंता का कारण बन चुकी है।

## अन्य पारिस्थितिकी ह्रास

प्राकृतिक संसाधनों के अधिक उपयोग तथा उपभोग से जल और भूमि पर प्रदूषण की समस्याएं सामने आती हैं। विकास के नाम पर कृषि तथा उद्योगों का अत्यधिक विस्तार मानव जाति के लिए चिताएँ उत्पन्न कर रहा है।

मृदाक्षरण-हवा और पानी के संपर्क में आने के कारण भूमि के कणों का अपने मूल स्थान से हटने एवं दूसरे स्थान पर एकत्र होने की क्रिया को भू-क्षरण या मृदा अपरदन कहते हैं। एक अनुमान के अनुसार दुनियाभर की 23 प्रतिशत के करीब कृषि योग्य भूमि, चारागाह भूमि तथा वन क्षेत्र में मृदाक्षरण के कारण गिरावट आयी है। मिट्टी में मिलाये जाने वाले रासायनिक तत्वों तथा कीटनाशक मृदाक्षरण के साथ पानी की धाराओं, नदियों और भूजल में जाकर मिल जाते हैं और इसके कारण खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों के मिले होने की आशंकाएँ भी बढ़ जाती हैं, जो मानवजाति तथा अन्य जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

लवणीकरण एवं जलभराव-कृषि एक ऐसा व्यवसाय है, जो अनेक कारकों पर निर्भर करता है। आबादी बढ़ रही है और बढ़ती आबादी को भोजन उपलब्ध करवाना एक मुख्य विषय है। मृदा में लवण की मात्रा को मृदा लवणता कहते हैं। सूखे क्षेत्रों में मिट्टी की सिंचाई भी लवणीकरण का कारण हो सकती है। इन जगहों पर सूर्य की तेज किरणें अधिकतर जल को वाष्पीकृत कर देती हैं और भूमि में लवण को छोड़ देती हैं। मिस्र और चीन इत्यादि देशों के अत्यधिक क्षेत्र लवणीकरण की समस्या से जूझ रहे हैं।

पानी का अत्यधिक भराव कृषि योग्य भूमि पर जलभराव माना जाता है। जल निकासी की समस्या निम्न जल प्रवाह, वाष्पीकरण की दर में गिरावट, कृषि भूमि का विस्तार मानवीय गतिविधियों के लिए जंगलों के कटाव की वजह पैदा होती है।

जल की कमी-21वीं शताब्दी में जल की कमी एक महत्त्वपूर्ण चिंता का विषय बना हुआ है। एक अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ है कि मध्य पूर्व देश जल की समस्या से जूझ रहे हैं। इन देशों में न तो कृषि-औद्योगिक आवश्यकताओं और न ही आबादी की जरूरतों के लिए पर्याप्त जल संसाधन हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भूजल का उपयोग ज्यादा मात्रा में होता है, लेकिन पुनर्भंडारण की दर कम है। अधिक भूजल का उपयोग जलस्तर में गिरावट का कारण बनता है। जलस्तर की गिरावट के कारण मेक्सिको, बेनिस सिटी इत्यादि देशों के क्षेत्रों में भूमि कटाव के कारण भूमि की सतह भूजल की गतिविधि के कारण धीरे-धीरे स्खलित हो रही है।

जल प्रदूषण–फैक्ट्रियों तथा कारखानों के उत्सर्जित कचरे का झीलों, तालाबों, नदियों, समुद्रों, महासागरों इत्यादि में मिलने से जल दूषित हो जाता है, जिसे जल प्रदूषण कहा जाता है। प्रदूषक तत्वों के अतिरिक्त जल स्रोतों में गिरावट की एक बडी वजह

# www.neerajbooks.com

#### 4 / NEERAJ : पर्यावरण समाजशास्त्र

ग्लोबल वार्मिंग भी है। नदियों में बाढ़ तथा बड़ी मात्रा में पानी बहकर महासागरों में मिल जाता है।

जैवविधिता का नुकसान–चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत के अनुसार पौधे, जंतु, कीट इत्यादि प्रजातियाँ हमेशा आती जाती रहती हैं। औद्योगिक क्रांति के बाद में बायोडायवर्सिटी जैव-विविधता को काफी नुकसान हुआ है। विश्व संरक्षण संघ ने 2007 में जो अध्ययन करवाया था, उसके अनुसार जंतुओं तथा वनस्पतियों की 16306 प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। इनमें से कुछ प्रजातियां प्रदूषण, निवास स्थानों के नष्ट होने के कारण विलुप्ति के कगार पर हैं। जैव-विविधता में गिरावट पारिस्थितिकी तंत्र को भी कमजोर करती है।

वन उन्मूलन या वनकटाव –वनकटाव का अर्थ है कृषि, शहरीकरण प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए मनुष्यों द्वारा वनों का अत्यधिक मात्रा में काटा जाता है। 1960 के बाद से वनों का कटाव तेजी से हो रहा है। एक अध्ययन के अनुसार 2000 से 2005 के बीच 30 लाख हेक्टेयर के करीब वन नष्ट हो चुके हैं। वनों के नष्ट होने से जीव–जन्तुओं के पर्यावास भी नष्ट हो गए। वन उन्मूलन का जलवायू पर बुरा असर पडा है।

## सामाजिक उत्तरदायित्व

मनुष्यों द्वारा पर्यावरण के अत्यधिक दोहन के कारण जो पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं उनका हल खोजना अत्यावश्यक है। पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन इस प्रकार है।

वैचारिक स्तर पर–पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरणविद, वैज्ञानिक, समाजशास्त्री संरक्षणवादी, नए पारिस्थितिक प्रतिमान, मानवीय मुक्तिवाद प्रतिमान, उत्पादन के ट्रेड मिल, पारिस्थितिकीय अपराध, हरित अपराध, सह निर्माणवाद जैसे सिद्धांतों के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं को दिखाया जाता है और उनका हल ढूंढा जाता है।

क्रियान्वयन या व्यावहारिक स्तर पर-पर्यावरण को क्षरण से बचाने से विश्व के विभिन्न देशों में सिर्फ वैचारिक स्तर पर ही काम नहीं हो रहा है, बल्कि व्यवहार में भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय न्याय संबंधी कई आंदोलन और अभियान चलाए जा रहे हैं। भारत में भी चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

## बोध प्रश्न

## प्रश्न 1. रिक्त स्थानों को पूर्ण करें-

- (i) पर्यावरणीय समाजशास्त्र ...... और......के संबंधों के अध्ययन का माध्यम है।
- (ii) कुछ महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय चिंताओं में ......
  ...... शामिल हैं। (कम-से-कम तीन लिखें)

- (iii) ...... जीवमंडल के सतत उपयोग एवं उचित प्रबंधन का माध्यम है।
- (v) ...... को हम भूजल, नदियों, झीलों, जलधाराओं, महासागरों में तत्वों के बहाव के तौर पर जानते हैं।
- (vi) धरती के वातावरण में सल्फर–डाई–ऑक्साइड और नॉक्स उत्सर्जन का पानी से मिश्रण का ..... कारण बनता है।
- (vii) वायु, पानी और अन्य कारणों से मिट्टी की ऊपरी पोषक तत्व के नुकसान को ..... नाम से जाना जाता है। उत्तर –(i) पर्यावरण, समाजशास्त्र, (ii) ग्लोबल वार्मिंग, अम्ल

वर्षा, ओजोन क्षय, (iii) जैव-विविधता, (iv) बाढ़ की समस्या, (v) जल प्रदूषण, (vi) अम्ल वर्षा, (vii) मुदा अपरदन।

प्रश्न 2. पर्यावरणीय समाजशास्त्र से क्या अभिप्राय है, इसमें किस अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है?

उत्तर-पर्यावरणीय समाजशास्त्र समाजों और उनके प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन पर्यावरणीय समाजशास्त्र कहलाता है। इस क्षेत्र में उन सामाजिक कारकों पर जोर दिया जाता है, जो पर्यावरणीय संसाधन प्रबंधन को प्रभावित करते हैं और पर्यावरणीय मुद्दों का कारण बनते हैं। पर्यावरण समाजशास्त्र का साधारण शब्दों में अर्थ है लोगों, अन्य जीवों, भूमि, पानी, हवा एवं धरती पर उपलब्ध हर आवश्यक वस्तु जो जीवन के लिए आवश्यक है। वहीं समाजशास्त्र से अभिप्राय समाज के उस व्यवस्थित अध्ययन से है, जो लोगों के समूहों और संस्थाओं के पारस्परिक संबंधों को दर्शाता है। अत: पर्यावरण समाजशास्त्र मानव समाज और भौतिक पर्यावरण के संबंधों के अध्ययन से संबंधित है।

शोधकर्त्ता और सिद्धांतवादी समाज और पर्यावरण के बीच के संबंधों के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। 1960 के दशक के पर्यावरण आंदोलनों के बाद पर्यावरण समाजशास्त्र ने समाजशास्त्र के उपक्षेत्र के रूप में आकार ले लिया है। इसमें जैव-विविधता का संक्षरण, प्राकृतिक साधनों का कुशलता से उपयोग, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के मुद्दों और समस्याओं के बारे में लोगों को जागरूक करना है। जब मानव जाति जागृत होगी, अपने उत्तरदायित्व को समझेगी तो पर्यावरणीय समस्या का समाधान किया जा सकता है तथा पारिस्थितिकी तंत्र ठीक किया जा सकता है।

# प्रश्न 3. आर. डनलप और डब्ल्यू कैटन ने समाज पर्यावरण संबंध को किस तरह समझाया है?

**उत्तर**–आर. डनलप और विलियम रॉबर्ट कैटन एक अमेरिकी समाजशास्त्री थे, जिन्हें पर्यावरणीय समाजशास्त्र और मानव